सेमेस्टर परीक्षा-2021

सगुण भक्ति काव्य

प्रश्नपत्र कोड: MHL-C312

अवधि: 3 घंटा **अधिकतम अंक: 70**

न्यूनतम अंक: 40%

नोट: प्रश्नपत्र के दो भाग हैं ए एवं बी। निर्देशानुसार दोनों भाग कीजिये

सेक्शन-ए: लघु उत्तरीय प्रश्न

निर्देश: किन्ही पांच प्रश्नो के प्रति प्रश्न लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये. प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

(5 X 6 = 30 अंक)

प्रश्न संख्या-1 रसखान के प्रेमतत्व निरूपण का वर्णन करें.

प्रश्न संख्या-2 जासु कृपा कटाच्छु सुर चाहत चितव न सोई |
राम पदारबिंद रति करति सुभावही खोई ||
उपरोक्त पंक्ति की व्याख्या कीजिए.

प्रश्न संख्या-3 मीराबाई की विरहानुभूति को स्पष्ट कीजिये.

प्रश्न संख्या-4 भ्रमरगीत परम्परा में भ्रमरगीत की विशेषताएँ लिखें.

प्रश्न संख्या-5 नन्ददास के जीवन पर प्रकाश डालिए.

प्रश्न संख्या-6 रसखान की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए.

प्रश्न संख्या-7 भ्रमरगीत का कलागत वैशिष्टय क्या है ?

प्रश्न संख्या-8 रसखान की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए.

प्रश्न संख्या-9 परमानन्दं दास का जीवन परिचय लिखिए.

प्रश्न संख्या-10 मीराबाई की भाषा शैली कैसी थी ?

सेक्शन-बी (दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश: किन्ही चार प्रश्नो के विस्तृत उत्तर दीजिये . प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

(4 X 10 = 40 अंक)

प्रश्न संख्या-11 मीराबाई की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए

प्रश्न संख्या-12 गोपियों के वाग्वैद्ग्ध को विवेचित कीजिये.

प्रश्न संख्या-13'रामचरितमानस तुलसीदास द्वारा रचित अद्वितीय कृति हैं '-इस कथन को सोदाहरण सहित स्पष्ट करें.

प्रश्न संख्या-14 कवि रसखान के अनुसार श्री कृष्ण ने छाती के रूप में कौन सा पर्वत उठाया और क्यों **?**

(व्याख्यात्मक प्रश्न)

नोट:प्रसंग-संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

प्रश्न संख्या-15 जोग ठगौरी ब्रज न बिकैहै |
यह ब्यौपार तिहारो ऊधो ! ऐसोई फिरि जैहै ||
जापै लै आए हो मधुकर ताके उर न समैहै |
दाख छाँड़ि कै कटुक निबौरी को अपने मुख खैहै ?
मूरी के पातन के केना को मुक्ताहल दैहै |
सूरदास प्रभु गुनहि छाँड़ि कै को निर्गुण निरबैहै ? ||

प्रश्न संख्या-16 ताते सुर सीसन्ह चढ़त जग वल्लभ श्रीखंड |
अनल दाहि पीटत घनहिं परसु बदन यह दंड ||
विषय अलंपट सिल गुनाकर | पर दुख दुख सुख सुख देखे पर |
सम अभूतरिपु बिमद बिरागी | लोभामरष हरष भया त्यागी ||

प्रश्न संख्या-17 आई देखन मनमोहन को,मोरे मन में छबि छाय रही
मुख पर का आंचल दूर किया ,

तब ज्योति में ज्योति समाय रही ||
सोच करे अब होत कहा है,
प्रेम के दुन्द में आय रही ||
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर ,
बूंद में बूंद समाय रही ||

प्रश्न संख्या-18 प्रभु नारद सबाद कहि मारुति मिलन प्रसंग |
पुनि सुग्रीव मिताई बालि प्रान कर भग ||
कपिहि तिलक करि प्रभु कृत सेल प्रबरषन बास |
बरनन बर्षा सरद अरु राम रोष कपि त्रास ||

--- पेपर कोड MHL-C 312 (एम.ए.हिंदी साहित्य ---